

नौकरी की किताब
सत्र 7: नौकरी की पुस्तक का धार्मिक आधार,
प्रतिकार सिद्धांत त्रिभुज
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 7 है, नौकरी की पुस्तक का थियोलॉजिकल फाउंडेशन, प्रतिशोध सिद्धांत त्रिभुज।

प्रतिशोध सिद्धांत का परिचय [00:26-2:46]

इससे पहले कि हम पुस्तक की ओर बढ़ें, हमें पुस्तक के कुछ धार्मिक आधारों के बारे में बात करने के लिए पुस्तक के उद्देश्य पर विस्तार करने की आवश्यकता है। इस तरह, हम प्राचीन दुनिया में महान सहजीवन के विचार से आगे बढ़ रहे हैं, विशेष रूप से उस चीज़ के बारे में बात करने के लिए जिसे प्रतिशोध सिद्धांत कहा जाता है। प्रतिशोध सिद्धांत मूलतः यह विचार है कि धर्मी लोग समृद्ध होंगे और दुष्ट लोग पीड़ित होंगे। मूलतः, लोगों को वही मिलता है जिसके वे हकदार हैं। जब मैं धर्मी, चौकस, विश्वासयोग्य कहता हूँ, तो उन शब्दों में से कोई भी शब्द प्रतिस्थापित करें, और वे समृद्ध होंगे। खैर, यह हो सकता है, आप जानते हैं, अच्छा स्वास्थ्य, सफलता, उनकी फसलें बढ़ती हैं, चाहे कुछ भी हो, खुशहाल परिवार। और दुष्ट वे हैं जो वफादार नहीं हैं, धर्मी नहीं हैं, ईमानदार नहीं हैं, वे फिर से पीड़ित होंगे, चाहे वह किसी स्तर पर या किसी अन्य पर आपदा हो। तो, यह इस विचार के बारे में बात करने का एक तरीका है कि लोगों को वही मिले जिसके वे हकदार हैं। धर्मी लोग समृद्ध होंगे; दुष्टों को कष्ट होगा। हम इसे प्रतिशोध सिद्धांत कहते हैं।

अब, निस्संदेह, लोगों के लिए यह विश्वास करना आम बात है कि जीवन में उनकी परिस्थितियाँ किसी न किसी तरह दर्शाती हैं कि वे भगवान या देवताओं के पक्ष में हैं या पक्ष से बाहर हैं। और उन्होंने कुछ ऐसा किया है जिसके कारण उन पर ये परिस्थितियाँ आई हैं। फिर, चाहे वह बुरा हो या चाहे वह अच्छा हो। वे पक्ष में हैं या पक्ष से बाहर, और यह उनकी परिस्थितियों में प्रतिबिंबित होता है, यह प्राचीन निकट पूर्व में लोगों के इस तरह सोचने के बारे में मान्यता प्राप्त थी। और इसी तरह

आज लोगों का इस तरह सोचना बहुत आम है, कि उनकी परिस्थितियाँ पक्ष में या पक्ष में नहीं होने को दर्शाती हैं।

भी हम बहुत लापरवाही से बात करते हैं, "ओह, मैंने जरूर कुछ सही किया होगा।" या "मैंने इसे अर्जित करने के लिए क्या किया?" जब चीजें बुरी हो जाती हैं. तो, यह प्रतिशोध सिद्धांत है जो अय्यूब की पुस्तक की नींव में है।

नौकरी में प्रतिशोध सिद्धांत [2:46-4:06]

वास्तव में, अय्यूब की पुस्तक प्रतिशोध सिद्धांत को माइक्रोस्कोप के नीचे रखती है क्योंकि अय्यूब और उसके दोस्त सभी प्रतिशोध सिद्धांत में बहुत दृढ़ता से विश्वास करते हैं। यह वास्तव में समस्या का हिस्सा है। वे प्रतिकार सिद्धांत देखते हैं; आप न केवल यह मानते हैं कि यदि कोई धर्मी है, तो वह समृद्ध होगा, और यदि कोई दुष्ट है, तो उसे कष्ट होगा, बल्कि आप इसे उलट भी देते हैं। यदि कोई पीड़ित है, तो वह अवश्य ही दुष्ट होगा। यदि कोई समृद्ध हो रहा है, तो उसने अवश्य ही कुछ सही किया होगा। और इसलिए, जब अय्यूब की परिस्थितियाँ इतनी नाटकीय रूप से, इतनी दुखद रूप से बदल जाती हैं, तो हम जानते हैं कि हर कोई क्या निष्कर्ष निकालेगा। वे निर्णय लेंगे कि उसने इस तरह की आपदा लाने के लिए, ऊंचाइयों से गहराई तक जाने के लिए वास्तव में कुछ बहुत बुरा किया होगा। यह उन चरम सीमाओं पर वापस जाता है जिनके बारे में हमने पहले बात की थी। अय्यूब मानवता की उच्चतम ऊंचाई पर है, और वह पीड़ा की सबसे निचली गहराइयों तक चला जाता है। वे चरम सीमाएँ महत्वपूर्ण हैं ताकि हम प्रतिशोध सिद्धांत के बारे में स्पष्ट दिमाग से सोच सकें।

चैलेंजर और प्रतिशोध सिद्धांत [4:06-5:53]

तो, अय्यूब की पुस्तक इस प्रतिशोध सिद्धांत को देखती है। आखिरकार, चुनौती देने वाले का प्रश्न याद रखें, क्या अय्यूब बिना कुछ लिए परमेश्वर की सेवा करता है? इस सब में प्रतिशोध का सिद्धांत कैसे काम करता है? प्रतिशोध सिद्धांत में, यह समझने का प्रयास है कि ईश्वर दुनिया में क्या कर रहा है, इसे स्पष्ट करना, इसे उचित ठहराना, इस तर्क को व्यवस्थित करना कि ईश्वर दुनिया में कैसे काम कर रहा है, कि ईश्वर एक न्याय प्रणाली पर काम कर रहा है। तुम अच्छा करते हो; तुम अच्छे

हो जाओ. तुम बुरा करते हो; बुरी चीजें होती हैं. इसलिए, प्रतिशोध सिद्धांत इस बात की समझ रखता है कि ईश्वर दुनिया में कैसे काम करता है। यह इसे परिमाणित करने या व्यवस्थित करने का एक प्रयास है।

चुनौती देने वाले का दावा है कि प्रतिशोध का सिद्धांत धर्मी लोगों को लाभ और समृद्धि प्रदान करता है, जो सच्ची धार्मिकता के विकास के लिए हानिकारक है क्योंकि यह इस गुप्त उद्देश्य, लाभ की प्रत्याशा, जो आप इससे प्राप्त करते हैं उसके लिए करना स्थापित करता है। इसलिए, चैलेंजर प्रतिशोध सिद्धांत पर ध्यान केंद्रित कर रहा है कि क्या यह वास्तव में भगवान की नीतियों का हिस्सा है। और अय्यूब का दावा, यदि प्रतिशोध सिद्धांत लागू नहीं किया जाता है, यदि धर्मी लोग पीड़ित होते हैं, तो, भगवान का न्याय संदिग्ध हो जाता है। तो, आप देख सकते हैं कि पुस्तक में हमने आरोप के जिन दो पहलुओं के बारे में बात की है, उनमें प्रतिशोध सिद्धांत बातचीत के केंद्र में है।

दावों का प्रतिशोध त्रिकोण [5:53-7:12]

अब हम इसे थोड़ा बेहतर समझ सकते हैं यदि आप एक त्रिभुज की कल्पना कर सकें। मैं इसे दावों का त्रिकोण कहता हूं. और त्रिभुज के एक निचले कोने पर, आपके पास प्रतिशोध सिद्धांत है; त्रिभुज के दूसरे निचले कोने पर, आपके पास अय्यूब की धार्मिकता है। और त्रिभुज के शीर्ष पर, तीसरे कोने पर, आपके पास भगवान का न्याय है।

अब, जब तक अय्यूब समृद्ध हो रहा है, वह त्रिकोण बहुत आसानी से, बहुत आराम से बना रहेगा। ईश्वर न्याय कर रहा है. नौकरी धर्मी है, प्रतिशोध सिद्धांत सत्य है, और सब कुछ खुश है। लेकिन जब अय्यूब को पीड़ा होने लगती है, तो हम उस त्रिकोण को देखते हैं, और कुछ तो होना ही है। आप तीनों कोनों पर टिके नहीं रह सकते: ईश्वर का न्याय करना, अय्यूब का धर्मी होना और प्रतिशोध का सिद्धांत। आप तीनों को पकड़कर नहीं रख सकते. कोई चीज़ होनी चाहिए। और जैसे-जैसे किताब सामने आती है, हमें पता चलता है कि कौन क्या त्यागने वाला है। यह वास्तव में पुस्तक के बारे में सोचने का एक दिलचस्प तरीका है।

अय्यूब के मित्र और दावों का प्रतिशोध त्रिकोण [7:12-8:24]

उदाहरण के लिए, अय्यूब के दोस्तों से शुरुआत करें। अय्यूब के मित्र, मैं उस कोने में उनका किला बनाने के विचार का उपयोग करूँगा। वे त्रिभुज के प्रतिशोध सिद्धांत कोने को चुनते हैं, और वे वहां अपना किला बनाते हैं। वे अपने भाषणों में बार-बार प्रतिशोध सिद्धांत की पुष्टि करते हैं। वे इसे स्थिति पर लागू करते हैं। वे इसे तर्क-वितर्क के भाग के रूप में उपयोग करते हैं। वे प्रतिशोध सिद्धांत के समर्थक हैं। तो, वे वहां अपना किला बनाते हैं। वे उसका बचाव करने जा रहे हैं। उस सुविधाजनक बिंदु से, वे त्रिभुज के अन्य दो कोनों की ओर देखते हैं; कौन सा जाने वाला है? क्या वे यह कहने जा रहे हैं, ठीक है, परमेश्वर वास्तव में न्याय के साथ काम नहीं कर रहा है, या क्या वे यह कहने जा रहे हैं कि अय्यूब वास्तव में धर्मी नहीं है?

खैर, हम जानते हैं कि वे कहाँ जाते हैं। उन्हें यह पुष्टि करते हुए बहुत खुशी हो रही है कि ईश्वर न्यायपूर्वक कार्य कर रहा है। और इसलिए, प्रतिशोध का सिद्धांत सत्य है और ईश्वर जांच के दायरे में नहीं है, निस्संदेह, समस्या अय्यूब है। वह उतना धर्मी नहीं होगा जितना वह हमें दिखता था, उतना धर्मी भी नहीं होगा जितना वह बाहर से हर किसी को दिखता था। और निश्चित रूप से, वह उतना धर्मी नहीं है जितना वह सोचता है कि वह है। समस्या नौकरी है। इसलिए, वे प्रतिशोध सिद्धांत कोने में अपना किला बनाते हैं, और वे अय्यूब के कोने को छोड़ देते हैं। उसी को जाना है।

नौकरी और प्रतिशोध के दावों का त्रिकोण [8:24-9:57]

जब हम अय्यूब और उसके दृष्टिकोण के बारे में सोचते हैं, तो निस्संदेह, यह बहुत अलग होता है। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि वह अपना किला कहां बनाता है। वह अपने ही कोने में अपना किला बनाता है। उसकी धार्मिकता उसके मन में अप्राप्य है। लेकिन, निश्चित रूप से, इससे थोड़ी अजीबता पैदा होती है क्योंकि अब उसे बाहर देखना होगा और आप किसे छोड़ने जा रहे हैं? क्या वह प्रतिशोध सिद्धांत को त्यागने जा रहा है, या क्या वह इस विचार को त्यागने जा रहा है कि ईश्वर न्यायपूर्वक कार्य करता है?

यह गरीब अय्यूब के लिए एक पहेली है। लेकिन जो हम पाते हैं वह बार-बार प्रतिशोध सिद्धांत की पुष्टि करता है। वह इसमें कमजोरी ढूंढने की कोशिश करता है, लेकिन वास्तव में वह ऐसा नहीं कर पाता। और इसलिए वह अपनी आँखें भगवान की ओर मोड़ लेता है। और जैसे-जैसे अय्यूब के

भाषण पुस्तक में आगे बढ़ते जाते हैं, यह परमेश्वर पर और अधिक दोषारोपण करता जाता है; यह और अधिक संदिग्ध हो जाता है, ईश्वर के बारे में संदेह करने लगता है और यह भी कि वह न्याय करता है या नहीं। इसलिए, अय्यूब अपने किले को अपने ही कोने में बनाता है, और वह प्रतिशोध सिद्धांत पर कायम रहते हुए भगवान के कोने को छोड़ रहा है।

एलीहू और दावों का प्रतिशोध त्रिकोण [9:57-14:59]

अब, संवाद अनुभाग में आने वाले तीन दोस्तों, एलीपहाज़, बिलदाद और ज़ोफर के अलावा, हमारे पास एक चौथा चरित्र है, एलीहू। यह पुस्तक के अंत में दूसरे प्रवचन तक नहीं आता है। लेकिन एलीहू अभी भी त्रिकोण में लगा हुआ है। एलीहू ने अपना किला परमेश्वर के न्याय के त्रिकोण के शीर्ष पर बनाया है। अब, उस बिंदु पर, आप कहते हैं, ठीक है, तो एलीहू क्या त्याग करेगा? क्या वह प्रतिशोध सिद्धांत को त्यागने जा रहा है, या, अय्यूब के अन्य मित्रों की तरह, क्या वह अय्यूब की धार्मिकता पर प्रश्नचिह्न लगाने जा रहा है?

कुछ लोगों ने किताब पढ़ी है और सोचा है कि एलीहू वास्तव में अन्य दोस्तों से बहुत अलग नहीं है। लेकिन मैं इससे पूरी तरह असहमत हूं। एलीहू खुद को त्रिकोण पर अलग तरह से रखता है और इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि दोस्त उसके करीब भी नहीं हैं।

तो, जब हम प्रश्न पूछते हैं, एलीहू अन्य दो कोनों में से कौन सा छोड़ देता है? हमने पाया कि, ठीक है, वह धोखा देता है; वह चतुर है। वह जो करता है वह प्रतिशोध सिद्धांत को देखता है, और वह कहता है कि प्रतिशोध सिद्धांत सत्य है, लेकिन मुझे लगता है कि हमने इसे गलत समझा है। हमें इसका त्याग कर इसका विस्तार करना है। देखिए, अधिकांश लोगों ने प्रतिशोध सिद्धांत के बारे में सोचा क्योंकि आपने अतीत में बुरे काम किए हैं, इसलिए अब आपके साथ बुरे काम हो रहे हैं। तो, आपकी परिस्थितियाँ पिछले व्यवहार की प्रतिक्रिया हैं। एलीहू आता है और कहता है, शायद यह उससे भी अधिक जटिल है। प्रतिशोध सिद्धांत को देखने का यह तरीका इसे सुधारात्मक, ठीक करने, संबोधित करने और जो गलत हुआ है उसका जवाब देने में सक्षम बनाता है।

क्या होगा अगर हम प्रतिशोध सिद्धांत को अधिक निवारक मानें। यहां बताया गया है कि यह कैसा दिखेगा। यह ऐसा कुछ नहीं है जो आपने अतीत में किया है जिसके कारण नकारात्मक परिणाम हो

रहे हैं, यह कुछ ऐसा है जिसमें आप शामिल होने के लिए तैयार हैं और आप इस तरह के व्यवहार के कगार पर हैं कि यह आपको इससे दूर कर देगा। और इसलिए, प्रतिशोध सिद्धांत अतीत की चीज़ों के बजाय वर्तमान विकासशील चीज़ों की प्रतिक्रिया हो सकता है।

अब, वह क्या करता है, इसका मतलब यह है कि, दोस्तों के विपरीत, उसे अय्यूब के अतीत में अधार्मिकता खोजने की ज़रूरत नहीं है। इसके बजाय, अब वह अय्यूब को अलग ढंग से देखता है। और वह कहता है, "तो यहाँ समस्या है अय्यूब। यहाँ आपके दुख का कारण क्या है? अपनी आत्म-धार्मिकता को देखो, भगवान की कीमत पर खुद को सही ठहराने, खुद को सही ठहराने की आपकी इच्छा।" वह कहते हैं, "समस्या यह नहीं है कि आपने पीड़ा शुरू होने से पहले क्या किया था।

समस्या इस बात से स्पष्ट हो गई है कि पीड़ा शुरू होने के बाद आपने कैसे प्रतिक्रिया दी है।

समस्या, फिर अय्यूब, बहुत स्पष्ट है, आपका आत्म-तुष्ट व्यवहार।"

इसलिए मैं कहता हूँ कि उसने धोखा दिया।" उन्होंने शर्तों को फिर से परिभाषित किया। और उन्हें पुनः परिभाषित करने में, इसने उसे एक विकल्प दिया जिसके बारे में अन्य दोस्तों ने कभी नहीं सोचा था, और अय्यूब स्वयं अपना बचाव करने की स्थिति में कम है। यहां तक कि जब वह अपनी धार्मिकता की पुष्टि करना जारी रखता है, तो उसकी आत्म-धार्मिकता और भगवान पर आरोप लगाने की उसकी इच्छा बहुत स्पष्ट हो जाती है।

इसलिए, एलीहू ने न्यायपूर्वक कार्य करते हुए अपना किला परमेश्वर पर बनाया है। और इस प्रक्रिया में, वह प्रतिशोध सिद्धांत पर कायम है, हालांकि उसने इसे फिर से परिभाषित किया है। और इसने उसे अय्यूब की धार्मिकता के विरुद्ध एक अलग प्रकार का हमला दिया है। एलीहू किताब के किसी भी अन्य मानवीय पात्र की तुलना में अधिक सही है। वह निकटतम हो जाता है। वह दोस्तों की सोच से परे है, और वह वास्तव में अय्यूब को अधिक यथार्थवादी, अधिक उचित रूप से देखता है।

एलीहू के साथ समस्या यह है कि भले ही वह किसी और की तुलना में सच्चाई के करीब है, लेकिन उसकी अपनी समस्याएं हैं। और, अंत में, वह अभी भी प्रतिशोध सिद्धांत को यह समझने का आधार बना रहा है कि चीज़ें कैसे काम करती हैं। वह बस इसे फिर से परिभाषित करता है। और जैसे-जैसे हम किताब पढ़ते हैं, हम एलीहू के हिस्से तक पहुंचते हैं, और हम उसका अधिक बारीकी से

मूल्यांकन करेंगे।

दावों का प्रतिकार त्रिकोण, समाधान का प्रयास [14:59-15:18]

तो, हमें अपना त्रिकोण मिल गया है, दावों का त्रिकोण, विभिन्न पार्टियां अलग-अलग स्थिति कैसे चुनती हैं, और उन विभिन्न स्थितियों से पुस्तक के परिदृश्य को कैसे देखें। अब हम इनमें से कुछ तनावों को सुलझाने का प्रयास करेंगे। लोगों ने प्रतिशोध सिद्धांत के तनाव को कैसे हल किया? आखिरकार, अधिकांश लोग, किसी न किसी समय, जीवन का अनुभव इस तरह से करने लगते हैं कि प्रतिशोध सिद्धांत उन्हें संदिग्ध लगने लगता है। तो फिर उन तनावों का समाधान कैसे किया जाता है?

एक तरीका यह है कि ईश्वर की प्रकृति के संबंध में कुछ योग्यताएँ प्राप्त की जाएँ। यह निश्चित रूप से वही है जो उन्होंने प्राचीन निकट पूर्व में किया था। उन्हें इस बात पर कोई भरोसा नहीं था कि ईश्वर न्यायपूर्वक कार्य कर रहा है। वे प्रतिशोध सिद्धांत पर विश्वास करते थे, लेकिन वास्तव में उनके पास एक साथ मजबूती से जुड़ा हुआ कोई त्रिकोण नहीं था। उन्होंने बस भगवान की प्रकृति से समझौता कर लिया था।

अन्य समय में लोग कष्ट के उद्देश्य के संबंध में समझौता कर सकते हैं या योग्य हो सकते हैं। कुछ लोग पीड़ा को शैक्षिक-चरित्र निर्माण के रूप में बात करते हैं। शायद इसके बारे में ईसा मसीह के कष्टों में भागीदारी के रूप में भी बात करना। और इस प्रकार, वे अंततः पीड़ा के उद्देश्य को पूरा कर लेते हैं। इस प्रकार प्रतिशोध सिद्धांत में कुछ तनावों का समाधान हो जाता है।

बाइबिल में अन्यत्र दावों का प्रतिशोध त्रिकोण: समय [15:18-18:02]

बाइबिल ग्रंथों में, कुछ लोग तनाव का समाधान करेंगे; उदाहरण के लिए, भजनहार कभी-कभी समय के बारे में सोचकर तनाव का समाधान करता है।

भजनकार कहता है, आप जानते हैं, विलाप भजन में, अधिकांश समय, वे प्रतिशोध सिद्धांत के संदर्भ में विलाप कर रहे हैं। उनके शत्रु उन पर विजय प्राप्त कर रहे हैं। और ऐसा क्यों होना चाहिए?

दुश्मन बुरा आदमी है। मैं अच्छा लड़का हूँ। ऐसा क्यों हो रहा है? और इसलिए प्रतिशोध सिद्धांत के बारे में यह प्रश्न कई विलाप भजनों में अंतर्निहित है। और कई बार, एक स्तोत्र का व्यवहार समय के संदर्भ में किया जाता है। आखिरकार, चीजें सुचारू होने जा रही हैं। आप जानते हैं, ईश्वर अपने उचित समय पर शत्रु के विरुद्ध कार्रवाई करेगा और भजनहार को पुनर्स्थापित करेगा।

इसलिए, कभी-कभी, निश्चित रूप से, ईसाई धर्मशास्त्र यहां तक कहता है कि शायद चीजें अभी खराब हैं, लेकिन हमें अनंत काल मिल गया है। हमें ईश्वर के साथ अनंत काल मिला है, स्वर्ग में अनंत काल। और इसलिए, चीजें ठीक हो जाएंगी। और अनंत काल के पैमाने पर, अब हम जो छोटी-छोटी चीजें झेल रहे हैं, वे मामूली हैं। इसलिए, कुछ लोग विस्तारित समय अवधारणा के साथ प्रतिशोध सिद्धांत को अर्हता प्राप्त करते हैं।

न्याय और विश्व एक समाधान के रूप में [18:02-19:07]

कुछ लोग दुनिया में न्याय की भूमिका के संबंध में प्रतिशोध सिद्धांत को अर्हता प्राप्त करते हैं। आप दुनिया के न्यायपूर्ण न होने के बारे में बात कर सकते हैं, भले ही आप अभी भी ईश्वर के न्यायपूर्ण कार्य करने के बारे में बात करते हों। वह यह कि इस संसार में अ-व्यवस्था चलती रहती है। हम इस विचार को देखते हैं कि न्याय इस बात का एकमात्र आधार नहीं है कि ईश्वर दुनिया में कैसे काम करता है। वह उससे समझौता नहीं करता। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या उसने संसार को अपने न्याय के अनुरूप बनाया है? और हम जानते हैं कि उसने ऐसा नहीं किया क्योंकि हम पापी लोग हैं, और फिर भी हमारा अस्तित्व अभी भी है। यदि दुनिया पूरी तरह से ईश्वर के न्याय के अनुरूप होती, तो यह ऐसी दुनिया नहीं होती जिसमें हम रह सकते। और इसलिए, एक पतित दुनिया को देखते हुए, पूर्ण न्याय प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

ईश्वर के गुणों का परिसर [19:07-20:47]

दुनिया में ईश्वर के संचालन का आधार उसका संपूर्ण चरित्र, उसके गुणों की संपूर्ण श्रृंखला है, न कि केवल एक या दूसरा गुण। आप कह सकते हैं कि ईश्वर प्रेम है, और वह सब कुछ ढक लेता है। नहीं, ऐसा नहीं है। उसके पास और भी बहुत सी चीजें हैं। इसलिए, किसी भी तरह से ईश्वर के चरित्र के

लिए हानिकारक हुए बिना प्रतिशोध सिद्धांत को योग्य बनाने का एक तरीका यह समझना है कि ईश्वर और उसकी दुनिया अलग-अलग हैं और उन्होंने उस पर न्याय नहीं थोपा है।

भगवान, अपनी बुद्धि में, न्याय से चिंतित हैं। लेकिन यह सब एक अपूर्ण दुनिया, एक गिरी हुई दुनिया और यहां तक कि अभी तक पूरी तरह से व्यवस्थित नहीं हुई दुनिया के मापदंडों को देखते हुए दिया गया है; ईश्वर ने गैर-व्यवस्था की दुनिया में व्यवस्था ला दी है, और अव्यवस्था, पाप भी सामने आ गया है। लेकिन हम एक पूर्णतः व्यवस्थित दुनिया में नहीं रह रहे हैं। और इसलिए, यह ऐसा नहीं है जो संपूर्ण रूप से परमेश्वर के गुणों को प्रतिबिंबित करता हो।

ऐसी पुष्टि हैं जो हमें प्रतिशोध सिद्धांत के बारे में मिलती हैं। और हम उन्हें भजनों में पाते हैं, विशेषकर ज्ञान भजनों में। इन्हें हम नीतिवचनों में पाते हैं। इन पुष्टियों का उद्देश्य इस बात का पूर्ण धार्मिक विवरण देना नहीं है कि दुनिया ईश्वर के गुणों और उसके न्याय करने के अनुसार कैसे काम करती है। वे स्वभावतः लौकिक हैं।

प्रतिशोध सिद्धांत कोई धर्मशास्त्र समाधान नहीं है [20:47-23:08]

प्रतिशोध सिद्धांत को हमें लौकिक प्रकृति के रूप में समझने की आवश्यकता है। इसका मतलब है कि चीजें अक्सर इसी तरह काम करती हैं लेकिन यह नहीं कि चीजें हमेशा कैसे काम करती हैं। यह कोई गारंटी नहीं है। यह कोई वादा नहीं है। प्रतिशोध सिद्धांत दुनिया में पीड़ा और बुराई की व्याख्या करने में अच्छी तरह से काम नहीं करता है। इसके लिए तकनीकी शब्द थियोडिसी है जो बताता है कि दुनिया में दुख और बुराई क्यों है। प्रतिशोध सिद्धांत थियोडिसी की पेशकश नहीं करता है। प्रतिशोध सिद्धांत इस बात की व्याख्या नहीं है कि ईश्वर दुनिया में सभी स्थानों पर हर समय कैसे कार्य करता है।

यह आंशिक रूप से इस बात की पुष्टि है कि ईश्वर कौन है। अर्थात्, परमेश्वर अपने वफ़ादार सेवकों के लिए अच्छी चीजें लाने में प्रसन्न होता है। और भगवान दुष्ट लोगों को दंडित करने को गंभीरता से लेते हैं, लेकिन वह उन चीजों को पूरा नहीं करते हैं क्योंकि, फिर से, यह एक गिरी हुई दुनिया है, और हममें से कोई भी इसके माध्यम से जीवित नहीं रह सकता है। हालाँकि, यह हमें ईश्वर की पहचान, ईश्वर के हृदय के बारे में बताता है। और उसकी पहचान और उसके चरित्र का दुनिया पर

प्रभाव पड़ना तय है - लहरदार प्रभाव। और इसीलिए कभी-कभी हमें ऐसा लगता है कि प्रतिशोध का सिद्धांत कभी-कभी काम कर रहा है। वास्तव में यह है। लेकिन हमें यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि यह हर परिस्थिति में हर समय काम करेगा। तो, हमारे पास धर्मशास्त्र है; यह वही है जो ईश्वर थियोडिसी के विरुद्ध खड़ा है; यह जीवन को उस रूप में समझाता है जैसा हम अनुभव करते हैं। वे विरोधाभासी स्थितियाँ हैं। और जॉब की किताब उन दोनों को अलग करने के लिए कुछ मौलिक सर्जरी करती है ताकि हम यह सोचने की गलती न करें कि धर्मशास्त्र थियोडिसी की ओर ले जाता है।

ईश्वर को किसी बचाव की आवश्यकता नहीं है [23:08-24:18]

यहोवा के न्याय को हमारे अनुभवों के पल-पल के विश्लेषण पर दार्शनिक रूप से काम करने के बजाय विश्वास पर लिया जाना चाहिए। उसका बचाव करने की जरूरत नहीं है। एक अर्थ में, थियोडिसी, थियोडिसी पर हमारे प्रयास, ईश्वर का थोड़ा अपमान हैं। उसे हमारे बचाव की जरूरत नहीं है, और हम वास्तव में बहुत कुशलता से उसका बचाव करने की स्थिति में नहीं हैं। उसका बचाव करने की जरूरत नहीं है। वह भरोसा करना चाहता है। ईश्वर के गुणों का संपूर्ण समूह एक जटिल, समन्वित तरीके से कार्य कर रहा है। हम कभी नहीं बता सकते कि ईश्वर कब न्याय को चुनेगा या कब दया को चुनेगा। हम यह कभी नहीं बता सकते कि उसकी करुणा किस चीज़ पर हावी हो सकती है जो उसे करना चाहिए। न्याय उस नक्षत्र का एक हिस्सा है, लेकिन यह ईश्वर के अन्य सभी गुणों पर हावी नहीं होता है।

यीशु कारण से प्रयोजन, थियोडिसी से धर्मशास्त्र की ओर स्थानांतरित हो रहा है [24:18-27:59]

यहां एक तरीका है जो हमें इसे सुलझाने में मदद कर सकता है। नए नियम में, यीशु को प्रतिशोध सिद्धांत के प्रश्नों का सामना और चुनौती दी गई है। यूहन्ना 9 में, वह व्यक्ति जो जन्म से अंधा था, शिष्यों को एक महान अवसर दिखाई देता है। यहाँ यह आदमी है जो जन्म से अंधा था। और जो प्रश्न उन्होंने यीशु से पूछा वह प्रतिशोध सिद्धांत प्रश्न है। "किसने पाप किया, इस आदमी ने या उसके माता-पिता ने।" देखिए, यह एक बड़ी पहेली है क्योंकि अगर ऐसा है, तो वह आदमी कैसे पाप कर

सकता है क्योंकि वह इस तरह पैदा हुआ था? और यदि ये उसके माता-पिता थे, तो मनुष्य को इसके लिए कष्ट कैसे सहना पड़ा? और इसलिए, यह सिर्फ मुख्य बिंदु है। और आप जानते हैं, शायद वे वास्तव में उत्साहित थे क्योंकि अब उन्हें युगों के प्रश्न का उत्तर मिलने वाला है क्योंकि यीशु उनके सामने खड़े हैं। और इसलिए, वे कहते हैं, "किसने पाप किया, इस आदमी ने या उसके माता-पिता ने?" अब आप देख सकते हैं कि उनका प्रश्न एक थियोडिसी प्रश्न है। इस आदमी की पीड़ा के लिए क्या स्पष्टीकरण दिया जाएगा? इसलिए, जब वे कारण का प्रश्न पूछते हैं, तो यह एक थियोडिसी प्रश्न है और एक विस्तारित धर्मशास्त्र की ओर बढ़ता है, जो कि यीशु करता है। यीशु उन्हें थियोडिसी से धर्मशास्त्र की ओर मोड़ देते हैं। क्या यह दिलचस्प नहीं है कि वह कहते हैं, "न तो यह आदमी और न ही इसके माता-पिता," उस समय तक, शिष्यों ने उत्साहपूर्वक रुकना बंद कर दिया था। और अब वे कह रहे हैं, "अरे नहीं, वह इसे फिर से कर रहा है।" वह इसे फिर से कर रहा है; वह हमारे द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर नहीं देगा; वह उस प्रश्न का उत्तर देने जा रहा है जो हमें पूछना चाहिए था। वह कहता है, "यह न तो यह मनुष्य था और न ही इसके माता-पिता, परन्तु इसलिये कि परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।"

अब यह वास्तव में एक दिलचस्प सवाल है क्योंकि वह जो करता है वह मूल रूप से कहता है, अतीत को मत देखो और कारण के बारे में सवाल मत पूछो; आपको वह उत्तर नहीं मिल रहा है। इसके बजाय, यीशु जो उत्तर देते हैं, यीशु उन्हें कोई कारण नहीं देते हैं। वह उसे अतीत का स्पष्टीकरण नहीं देता। लेकिन वह कहते हैं कि आपको अपना ध्यान भविष्य की ओर लगाना चाहिए और उद्देश्य की तलाश करनी चाहिए। ईश्वर की महिमा एक उद्देश्य है। यह कोई कारण नहीं है। यह कोई कारण नहीं है। और इसलिए, यीशु उनका ध्यान अतीत से और कारण से हटाकर प्रयोजन पर केंद्रित कर देते हैं। पीड़ा का कोई स्पष्टीकरण सामने नहीं आ रहा है। कुछ भी संभव नहीं है; कोई भी आवश्यक नहीं है।

हमें परमेश्वर की बुद्धि पर भरोसा करना होगा और उसके उद्देश्य की तलाश करनी होगी। तो, यीशु उसी प्रकार का उत्तर देते हैं। और यह वही उत्तर है जो अंततः अय्यूब को मिलता है। ईश्वर की बुद्धि

पर भरोसा रखें और उसके उद्देश्य की तलाश करें। कारण का स्पष्टीकरण पाने की अपेक्षा न करें। यह कारणों के बारे में नहीं है।

यीशु और ल्यूक 13 गिरती मीनार [उद्देश्य परिवर्तन का कारण] [27:59-29:52]

ल्यूक अध्याय 13, श्लोक एक से पाँच तक में यीशु को फिर से इसका सामना करना पड़ता है। यहाँ उनसे पूछा गया कि इस टावर के बारे में क्या कहना जो लोगों पर उस समय गिर गया जब वे एक उत्सव के लिए वहाँ गए थे? आप इस प्रकार की बेतरतीब दिखने वाली आपदा की व्याख्या कैसे करते हैं? और फिर, यीशु उनका ध्यान इस कारण से हटा देते हैं। इसका इससे कोई लेना-देना नहीं है कि कौन धर्मी था और कौन दुष्ट। उनका कहना है कि पाप और दंड के बीच एक-से-एक पत्राचार नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि वह उन्हें इस घटना को एक चेतावनी के रूप में देखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वह कारण के प्रश्न को शामिल करने से इनकार करते हैं और अपने दर्शकों का ध्यान ऐसी घटनाओं के उद्देश्य की ओर निर्देशित करते हैं, हमें चेतावनी दें।

वे हमें अलग-अलग शब्दों में सोचने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, यह सोचने के लिए कि जीवन इतनी जल्दी कैसे समाप्त हो सकता है, यह सोचने के लिए कि दुख कैसे आ सकते हैं। यह एक-से-एक पत्राचार के बारे में नहीं है।

इसलिए, हम देखते हैं कि जब यीशु प्रतिशोध सिद्धांत के उन मुद्दों को संबोधित करते हैं जिनसे उनका सामना हुआ है, तो वह लगातार कारण या कारण के लिए स्पष्टीकरण देने से दूर हो जाते हैं। और जब हम दुनिया में अपने स्वयं के अनुभवों के बारे में सोचते हैं तो हम अपनी अपेक्षाओं को समायोजित करना शुरू करते हैं तो जॉब की पुस्तक क्या करने जा रही है इसका यह एक बड़ा हिस्सा है।

अब हम नौकरी की पुस्तक में अनुभाग दर अनुभाग शामिल होने के लिए तैयार हैं। और हम इसे अगले भाग में शुरू करेंगे।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 7 है, नौकरी की पुस्तक का थियोलॉजिकल फाउंडेशन, प्रतिशोध सिद्धांत त्रिभुज। [29:52]